# B.A. (Part-III) Examination, 2018

## हिन्दी साहित्य-तृतीय वर्ष ( द्वितीय प्रश्न-पत्र )

## For Collegiate Candidates

Time allowed : Three Hours Maximum marks : 100

*प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें।*

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:-

(क) उस समय अब के समान राजनैतिक अत्याचार कुछ न था, इसी से उनका साहित्य राजनीति की कुटिल उक्ति युति से मलिन नहीं हुआ था। नये आये हुये आर्यों की नूतन ग्रथित समाज के संस्थापन में सब तरह की अपूर्णता थी सही, पर सबका निर्वाह अच्छी तरह होता जाता था, किसी को किसी कारण से किसी प्रकार का अस्वास्थ्य न था, आपस में एक-दूसरे के साथ अब-का-सा बनावट का कुटिल बर्ताव न था। इसलिये उस समय के उनके साहित्य वेद में भी कृत्रिम भक्ति, कृत्रिम सौहार्द, कपटवृत्ति, बनावट और चुनाचुनी ने स्थान नहीं पाया।

**अथवा**

क्रोध की उग्र चेष्टाओं का लक्ष्य हानि या पीड़ा पहुँचाने के पहले आलम्बन के भय का संचार करना रहता है। जिस पर क्रोध प्रकट किया जाता है वह यदि डर जाता है और नम्र होकर पश्चाताप करता है तो क्षमा का अवसर सामने आता है। क्रोध का गर्जन-तर्जन क्रोध पात्र के लिये भावी दुष्परिणाम की सूचना है, जिससे कभी-कभी उद्देश्य की पूर्ति हो जाती हैं और दुष्परिणाम की नौबत नहीं आती। 10

(ख) हिन्दुओं ने अपने साहित्य में नाना जाति के ज्ञान-विज्ञान को इस अपनेपन के साथ ग्रहण किया है कि पंडितें को यह निर्णय करने में प्राय: ही अड़चनों का सामना करना पड़ता है कि कौन-सा ज्ञान किस देश से ग्रहण किया गया है। बाहरी विद्वानों के ज्ञान को अपना बनाकर प्रकट करने की कला में कोई भी भारतीयों को मुकाबला नहीं कर सकता। बाहरी ज्ञान को हिन्दू आचार्यों ने इतने दर्द के साथ अपनाया है, ऐसा समादर किया है, इतना मार्जित कर लिया है कि देखने वाले को आश्चर्य होता है। 10

**अथवा**

कबीर आदि ज्ञान-मार्गियें की आध्यात्मिकता तो एकदम स्पष्ट है। रहस्यमय सत्ता की अभिव्यक्ति और मिथ्या संसार की सुदृढ़ धारणा उनके आध्यात्मक के अविचल स्तम्भ हैं। आध्यात्मिक काव्य के लिये एक अखण्ड सत्ता का स्वीकार-वह प्रेममय हो, ज्ञानमय या आनन्दमय-जितना आवश्यक था, सांसारिक सत्ता या व्यावहारिक जीवन का स्वीकार भी उतना ही अनिवार्य हो गया था। आध्यात्मिक या अध्यात्मवादी काव्य की यही विशेषता थी। 10

(ग) यह प्रेम आध्यात्मिक है या मानवीय? ऊपर से देखने पर मालूम होगा कि यह प्रेम आध्यात्मिक है और ये कवि ईश्वर के ध्यान में मग्न है। वास्तव में प्रेम का 'रूप' ही आध्यात्मिक है, उसका 'अन्तस' मानवीय है। मानव-मात्र की समानता, मानव-प्रेम यही उनके प्रेम का मूल सूत्र है। इसीलिये मानवता को ऊँच-नीच में बाँटने वाली, जाति, वर्ण और धर्म के नाम पर मानव से घृणा सिखाने वाली, विचारधारा का वे विरोध करते हैं। सूर और तुलसी में राम और कृष्ण की कथा के माध्यम से प्रेम और भी स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है। 10

**अथवा**

सीता जंगल की सूखी लकड़ी बीनती है, जलाकर अंजोर करती हैं और जुड़वाँ बच्चों का मुँह निहारती हैं। दूध की तरह अपमान की ज्वाला में चित्त कूद पड़ने के लिये उफनता है और बच्चों की प्यारी और मासूम सूरत देखते ही उस पर पानी के छींटे पड़ जाते हैं, उफान दब जाता है। पर इस निर्वासन में भी सीता का सौभाग्य अखण्डित है, वह राम के मुकुट को तब भी प्रमाणित करता है, मुकुटधारी राम को निर्वासन से भी बड़ी व्यथा देता है और एक बार और अयोध्या जंगल बन जाती है, स्नेह की रसधार रेत बन जाती है, सब कुछ उलट-पलट जाता है। 10

(घ) बाल की जड़ बहुत गहरी नहीं होती है। हृदय से तो उगता नहीं है यह। यह सतही है, बेमानी! यौवन सिर्फ काले बालों का नाम नहीं है। यौवन नवीन भाव, नवीन विचार ग्रहण करने की तत्परता का नाम है; यौवन साहस, उत्साह निर्भयता और खतरे-भरी जिन्दगी का नाम है; यौवन लीक से बच निकलने की इच्छा का नाम है। और सबसे ऊपर, बेहिचक बेवकूफी करने का नाम यौवन है। मैं बराबर बेवकूफी करता जाता हूँ। वह सफेद झंडा प्रवंचना है। हिसाब करने की कोई जल्दी नहीं है। सफेद बाल से क्या होता है? 10

**अथवा**

महान कला सार्वभौमिक होती है, हर देश और समाज की सीमाओं से परे और ऊपर। मुझे यह उत्तर उतना ही असन्तोषजनक लगता है, जितना कला में शाश्वत को ढूँढना। क्रांति के फार्मूले, मानव-मुक्ति के आदर्श, आध्यात्मिक शांति और सत्य पाने के सूत्र सार्वभौमिक हो सकते हैं, होते भी हैं, उनमें एक कालातीत सत्य होता है, जिसके कारण बुद्ध और ईसा और ताओ का सन्देश आज भी हमें इतना महत्वपूर्ण और मर्मस्पर्शी जान पड़ता है। किन्तु कला? एक कलाकृति का जादू और मर्म और रहस्य उसके सार्वभौमिक सन्देश में नहीं, उसकी नितान्त निजी, विशिष्ट बुनावट में निहित होता है, जिसमें भाषा, रंग और ध्वनियों के रेशे एक सर्वथा मौलिक, अद्वितीय सृष्टि की रचना करते हैं। 10

2. 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है' निबन्ध में व्यक्त भावों को सोदाहरण लिखिए। 15

**अथवा**

'सन्त-साहित्य की ऐतिहासिक भूमिका' निबन्ध में व्यक्त विचारों को अपने शब्दों में लिखिये। 15

3. 'मधुर-मधुर रसराज' निबन्ध में कुबेरनाथ राय ने जो विचार व्यक्त किये हैं, उन्हें सोदाहरण लिखिये। 15

**अथवा**

हरिशंकर परसाई के व्यंग्यात्मक लेख 'पहला सफेद बाल' की समीक्षा कीजिये। 15

4. रस की परिभाषा बताते हुये उसके अवयवों पर विस्तृत प्रकाश डालिये। 15

**अथवा**

काव्य में अलंकारों का क्या महत्व है? यमक व श्लेष अलंकार की सोदाहरण व्याख्या करते हुए दोनों में अन्तर बताइये। 15

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी कीजिये:- 15

(i) छन्द की परिभाषा एवं स्वरूप

(ii) काव्य गुण का सोदाहरण परिचय

(iii) शब्द शक्ति का परिचय

(iv) दोहा, चौपाई छन्द की सोदाहरण व्याख्या 7½×2